रहीम ग्रन्थावली

रहीम की सम्पूर्ण कृतियों का प्रामाणिक संस्करण
विस्तृत भूमिका और जीवनचरित के साथ

सम्पादक
विद्यानिवास मिश्र

संयुक्त सम्पादक
गोविन्द रजनीश

ISBN 81-903158-2-X

जैनिथ पब्लिशर्स
4695/21-ए, दरियागंज नई दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण : 2005
© लेखकाधीन
मूल्य : 175.00

शुभम् ऑफसेट, दिल्ली-110032
में मुद्रित

RAHEEM GRANTHAWALI
Ed. by Dr. Vidyaniwas Mishra

जैनिथ पब्लिशर्स वाणी प्रकाशन की सहयोगी संस्था

नगर शोभा

आदि रूप की परम दुति[1], घट-घट रहा समाइ।
लघु मति ते मो मन रसन, अस्तुति कही न जाइ।।1।।

नैन तृप्ति कछु होतु[2] है, निरखि जगत की भाँति।
जाहि ताहि में पाइयै[3], आदि रूप की काँति।।2।।

उत्तम जाती[4] ब्राह्मनी[5], देखत चित्त लुभाय।
परम पाप पल में हरत, परसत वाके पाय[6]।।3।।

परजापति परमेश्वरी[7], गंगा रूप-समान।
जाके अंग-तरंग में, करत नैन अस्नान।।4।।

रूप-रंग-रति-राज में, खतरानी इतरान।
मानों रची बिरंचि पचि, कुसुम कनक मैं सान।।5।।

पारस पाहन की मनो, धरै पूतरी अंग।
क्यों न होई कंचल पहू[8], जो बिलसै तिहि संग।।6।।

कबहुँ दिखावै जौहरिन[9], हँसि हँसि मानिक लाल।
कबहूँ चख ते च्वै परै, टूटि मुकुत की माल।।7।।

जद्यपि[10] नैननि ओट है, बिरह चोट बिन घाइ।
पिय उर पीरा ना करै, हीरा सी गड़ि जाइ।।8।।

कैथिनी कथन न पारई, प्रेम-कथा मुख बैन[11]।
छाती ही पाती मनो, लिखै मैन की सैन।।9।।

बरुनि-बार लेखनि करै, मसि काजरि भरि लेइ[12]।
प्रेमाखर[13] लिखि नैन ते, पिय बाँचन को देह[14]।।10।।

पाठान्तर— 1. द्युति। 2. होत। 3. पाइयत। 4. जाति। 5. ब्राह्मणी, बराह्मनी। 6. पाँइ। 7. परमेस्वरी। 8. बहू। 9. जौहरनि। 10. जद्दपि। 11. बैन। 12. लेय। 13. प्रेमाक्षर। 14. देय।

चतुर चितेरिन[1] चित हरै चख खंजन के भाइ।
द्वै आधौ करि डारई, आधौ मुख दिखराइ।।11।।

पलक न टारै बदन तें, पलक न मारै नित्र।
नेकु[2] न चित तें ऊतरै, ज्यों कागद में चित्र।।12।।

सुरंग बरन बरइन बनी, नैन खवाये पान।
निसि दिन फेरै[3] पान ज्यों, बिरही जन के प्रान।।13।।

पानी पीरी अति बनी, चन्दन खौरे गात।
परसत बीरी अधर की, पीरी कै ह्वै जात।।14।।

परम रूप कंचन बरन, सोभित नारि सुनारि।
मानों साँचे ढारि कै, बिधिना गढ़ी सुनारि।।15।।

रहसनि बहसनि मन हरै, घेरि घेरि[4] तन लेहि।
औरन को चित चोरि कै, आपुन चित्त न देहि।।16।।

बनिआइन[5] बनि आइ कै, बैठि रूप की हाट।
पेम पेक तन हेरि कै, गरुए[6] टारत[7] बाट।।17।।

गरब तराजू करत चख, भौंह मोरि मुसक्यात।
डाँड़ी मारत बिरह की, चित चिन्ता घटि जात।।18।।

रँगरेजिन[8] के संग में, उठत अनंग तरंग।
आनन ऊपर पाइयतु, सुरत अंत के रंग।।19।।

मारति नैन कुरंग तैं, मो मन मार मरोरि[9]।
आपुन अधर सुरंग तैं, कामिहिं काढ़ति बोरि[10]।।20।।

पाठान्तर— 1. चितैरनि। 2. नेक। 3. फेरैं। 4. घोर-घोर। 5. बनियांइन।
6. गरुवे। 7. तारत। 8. रंगरेजनि। 9. मरोर। 10. बोर।